उच्चतर माध्यमिक शाला के शिक्षकों के स्वभाव एवं कार्य–संस्कृति पर एक अध्ययन

डॉ. ईश्वर सिंह बरगाह*
श्रीमती कीर्ति सिंह बरगाह**

सारांश

यद्यपि आज शालाओं में नियमित शिक्षकों का वेतन काफी संतोषपूर्ण होने के पश्चात भी शिक्षा के स्तर में गिरावट देखी जा रही है। इसमें शाला की दोषपूर्ण नीतियों के कारण शालाओं की स्थिति भी दयनीय हो गई है। नियमित शिक्षकों के रिक्त स्थानों पर शिक्षा कर्मियों की नियुक्ति भी अपना प्रभाव डाल रही है। इस विभेद पूर्ण नीति के कारण शिक्षकों के स्वभाव के विभिन्न परिमाणों में अंतर पाया जाना कोई बड़ी बात नहीं है। वहीं शाला का शालेय वातवरण भी शिक्षकों के कार्य करने की प्रणाली से प्रभावित हो रहा है। कुछ एक शिक्षकों को छोड़कर कोई भी अपने उत्तरदायित्व को निभाना तो दूर समझने का प्रयास भी नहीं कर रहा है। जिसके कारण वहाँ की व्यवस्था एक विकृत रूप ले रही है। जिससे उस संस्था की कार्य–संस्कृति का निर्माण होता है। इस अध्ययन में शिक्षकों के स्वभाव एवं उनके परिमाणों और उनकी कार्य–संस्कृति के मध्य सह–संबंध गुणांक ज्ञात किया गया, जो यह दर्शाता है कि शिक्षकों के स्वभाव एवं विभिन्न परिमाण उन्हीं शिक्षकों की कार्य–संस्कृति में कोई सार्थक सह–संबंध परिलक्षित नहीं हुआ है।

भूमिका (Introduction)

शिक्षक का स्वभाव एक ओर जहाँ शालेय का शैक्षिक वातावरण बनाने में अहम् भूमिका निभाता है वहीं दूसरी ओर उस शिक्षक का स्वभाव विद्यार्थी के ज्ञान ग्रहण करने, उसकी प्रकृति में बदलाव तथा उसके उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिये प्रोत्साहित भी करती है। ये कहना अनुचित न होगा कि शिक्षकों के व्यक्तित्व का दिशादर्शन विद्यार्थियों के चरित्र निर्माण में सहायक होता है। शिक्षकों का व्यक्तित्व शालेय कार्य को एक दिशा प्रदान करता है।

शिक्षकों के स्वभाव, व्यवहार, अभिवृत्ति, योग्यता, क्षमता, आकांक्षा एवं प्रकृति में अंतर होना स्वाभाविक है। प्रत्येक शिक्षक का व्यक्तित्व उसके पारिवारिक परिवेश, शालेय परिवेश तथा सामाजिक परिवेश द्वारा बनता है और उसका स्थापित व्यक्तित्व जहाँ कार्यरत् है, उस शाला के कार्य–संस्कृति पर प्रभाव डालेगी।

यद्यपि भारत एक विकासशील देश है, परंतु प्रायः यह देखा गया है कि लोगों का कार्य करने के प्रति नकारात्मक रूख है। कार्य न करने की मनोस्थिति उन्हें विरासत में मिली है। कर्मचारी यूनियन जिनका गठन इसलिये किया गया था कि प्रबंधन एवं कर्मचारियों के मध्य सामंजस्य बना रहे और संस्थान की प्रगति के लिये दोनों मिल–जुलकर कार्य करें परंतु उसका तो रूप ही बिगाड़ दिया गया है तथा कार्य करने की शैली/ प्रवृत्ति गिरी है।

शिक्षा संस्थान में शिक्षकों को अपने अधिकारों का ज्ञान तो है परन्तु अपने दायित्वों का बोध नहीं है ये इसलिए भी हुआ क्योंकि अध्यापन की विधियाँ एवं उनके क्रियान्वयन विरोधाभासी पाये गये। नियमित शिक्षकों के रिक्त स्थानों के स्थान पर दैनिक वेतन भोगी अथवा शिक्षाकर्मी को शिक्षा का दायित्व प्रभार सौंपा गया परन्तु उन दायित्वों का अवबोध नहीं कराया गया जिसके कारण शिक्षकों के स्वभाव और उनके कार्य करने की प्रणाली में अन्तर पाया जाना स्वाभाविक है। निम्न अध्ययन इस बात को दर्शाते हैं कि शिक्षकों के स्वभाव एवं कार्य–संस्कृति पर अभी बहुत कुछ काम बाकी है।

परमेश एवं नारायणा (1977) ने "स्वभाव पर सृजनात्मकता एवं बुद्धि के प्रभाव" विषय पर शोध किया। निष्कर्ष यह दर्शाता है कि उच्च एवं निम्न स्तर के सृजनात्मक विद्यार्थियों के स्वभाव के कुछ एक परिमाणों को छोड़कर सक्रियता, प्रभुत्व, आवेगता, स्थिरता एवं

*प्राचार्य, छत्तीसगढ़ कल्याण शिक्षा महाविद्यालय, अहेरी, दुर्ग (छ.ग.)
**सहायक प्राध्यापक, छत्तीसगढ़ कल्याण शिक्षा महाविद्यालय, अहेरी, दुर्ग (छ.ग.)

प्रतिबिम्बता जैसे गुणों में कोई सार्थक अंतर नहीं प्राप्त हुआ है। बेट्स (1994) ने स्वभाव के प्रत्यय की महत्ता पर प्रकाश डाला उनके स्वभाव प्रत्यय बहुत लाभदायक और उपयोगी होते हैं जो अन्य प्रत्ययों के साथ मिलकर एक संरचना, एक मार्ग, एक दिशा तथा सोच का निर्माण करता है जो व्यक्ति के कार्य करने की दिशा निर्मित करता है तथा व्यक्तिगत विभिन्नता प्रदर्शित करता है। वैलेंसिक एट आल (2010) ने शिक्षकों के पूर्व अनुमानित शक्ति के आधार पर शिक्षकों के स्वभाव का कक्षा–कक्ष में शिक्षण के संप्रेषण पर विद्यार्थी के प्रत्यक्षीकरण का अध्ययन किया। इस अध्ययन का परिणाम शिक्षकों के स्वभाव और विद्यार्थियों द्वारा शिक्षकों पर सामाजिक सम्प्रेषण पर मिलाजुला असर पाया गया। यद्यपि स्वभाव एवं सामाजिक सम्प्रेषण के मध्य सार्थक सह–संबंध ($r=.37$, $p<.001$) स्तर पर सार्थक पाया गया। सांगरी एवं वैद्य (2006) ने अपने अध्ययन में लिंग एवं कार्य तथा महिला संस्कृति पर कार्य कर अपना विचार प्रस्तुत किया। यह निष्कर्ष निकाला कि महिलाओं में कार्य करने की प्रवृत्ति तथा संस्कृति में संबंध होता है। शर्मा (2010) ने "विभिन्न शालेय संगठनात्मक वातावरण वाले विद्यालयों के शिक्षकों की कार्य–संस्कृति पर एक अध्ययन" विषय पर शोध कार्य किया। जिसमें निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए। 1. विभिन्न शालेय संगठनात्मक वातावरण में शिक्षकों की कार्य–संस्कृति में सार्थक अंतर पाया गया। 2. विभिन्न शालेय संगठनात्मक वातावरण वाले विद्यालयों के सभी महिला शिक्षकों तथा पुरूष शिक्षकों के मध्य कार्य–संस्कृति में सार्थक अंतर पाया गया। 3. शिक्षकों की कार्य–संस्कृति को उनकी ग्रामीण एवं शहरी परिवेश प्रभावित करते हैं। 4. ग्रामीण एवं शहरी परिवेश के विभिन्न प्रकार की शालेय संगठनात्मक वातावरण वाले विद्यालयों के शिक्षकों की कार्य–संस्कृति में सार्थक अंतर प्राप्त नही हुआ।

उद्देश्य (Objective)

उच्चतर माध्यमिक शाला में कार्यरत शिक्षकों के स्वभाव एवं कार्य–संस्कृति के सह–संबंध का अध्ययन करना।

परिकल्पना (Hypothesis)

H_0: "उच्चतर माध्यमिक शाला के शिक्षकों के स्वभाव एवं कार्य–संस्कृति के मध्य सार्थक सह–संबंध नहीं पाया जाता है।"

न्यादर्श (Sample)

इस शोध अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया है। अन्यादर्श दुर्ग जिले के शिक्षा जिला दुर्ग क्षेत्र के 334 शालाओं में से 23 शासकीय, 24 निजी तथा 3 इस्पात संयंत्र (कुल 50 शाला) शालाओं का चयन यादृच्छिकी विधि का उपयोग करते हुये 15% शालाओं का चयन किया गया है।

प्रत्येक विषय के शिक्षकों के द्वारा ली जा रही कक्षाओं के 10–10 विद्यार्थियों का चयन कर उनसे उनके शिक्षकों के स्वभाव के मापन को न्यादर्श के रूप में लिया गया है।

उपकरण (Tools)

स्वभाव मापन के लिये शिक्षक स्वभाव मापनी परीक्षण द्वारा डॉ.पी.के. श्रीवास्तव एवं श्रीमती कनक सिन्हा (2006), का चयन किया गया है तथा शिक्षकों की कार्य–संस्कृति के मापन के लिये डॉ.पी.के. श्रीवास्तव (2002) द्वारा निर्मित 'शिक्षक कार्य–संस्कृति' प्रश्नावली का उपयोग किया गया है।

विश्लेषण एवं चर्चा (Analysis and Discussion)

कुल 327 शिक्षकों पर स्वभाव मापनी एवं कार्य–संस्कृति प्रश्नावली का प्रशासन कर प्राप्त आकड़ों का मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन निकाल कर दोनों चरों के मध्य सह–संबंध गुणांक निकाला गया। इसी प्रकार स्वभाव के विभिन्न परिमाण (सामाजिकता, सहनशीलता, सहयोगिता, आक्रामकता, उत्साही, उत्तरदायी तथा प्रबलता) में प्राप्त आकड़ों का मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन ज्ञात कर सभी परिमाणों का उनके कार्य–संस्कृति के प्राप्त आकड़ों के साथ सह–संबंध गुणांक निकाला गया। तथा प्रस्तावित परिकल्पना के सत्यापन हेतु मूल्य निम्न सारणी में प्रस्तुत कर तुलनात्मक निष्कर्ष निकालने का प्रयास किया गया है।

सारिणी : शिक्षकों के स्वभाव, परिमाण एवं कार्य–संस्कृति का सांख्यिकीय विवरण :–

स्वभाव एवं परिमाण	T- स्वभाव			WC-कार्य–संस्कृति			सह–संबंधमान (r)
	संख्या	मध्यमान	प्र.वि.	संख्या	मध्यमान	प्र.वि.	
T- स्वभाव	327	22.0719	1.3575	327	95.4067	7.3877	+.045NS
D1-सामाजिकता	327	20.7407	2.0354	327	95.4067	7.3877	–.019 NS
D2-सहनषीलता	327	19.2444	2.4951	327	95.4067	7.3877	+.073 NS
D3-सहयोगिता	327	22.6083	15.4248	327	95.4067	7.3877	+.054 NS
D4- आक्रमकता	327	8.6557	1.2051	327	95.4067	7.3877	+.032 NS
D5- उत्साही	327	20.8205	2.2390	327	95.4067	7.3877	+.048 NS
D6-उत्तरदायी	327	21.9902	1.8252	327	95.4067	7.3877	+.010 NS
D7 -प्रबलता	327	21.0801	10.0401	327	95.4067	7.3877	–.001 NS

df = 325 P> .001 सार्थक नहीं

उपर्युक्त सारिणी का अध्ययन करने पर पाते हैं कि परिमाण आक्रमकता का मध्यमान निम्नतम पाया गया जबकि सहयोगिता परिमाण का मध्यमान अधिकतम पाया गया, यह इस बात को दर्शाता है कि शिक्षकों में सहयोगिता परिमाण अधिक होता है।

जबकि स्वाभाव एवं स्वाभाव के सभी परिमाणों तथा उनके कार्य–संस्कृति के मध्य कोई सार्थक सह–संबंध नहीं पाया गया। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि शिक्षकों के स्वभाव का सह–संबंध उनके कार्य–संस्कृति से नहीं होता है।

अतः प्रस्तावित परिकल्पना सत्यापित होती है।

उक्त परिणाम को आधार प्रदान करने के लिए इन चरों को लेकर शिक्षा जगत में किसी भी प्रकार का शोधकार्य नहीं ज्ञात हो पाया है।

निष्कर्ष (Conclusion)

शिक्षकों के स्वभाव एवं उनके परिमाणों का अवलोकन करने पर ये पाते हैं कि सहयोगिता परिमाण में शिक्षकों की भूमिका अधिक पाई गई जबकि आक्रामकता परिमाण में सबसे कम मध्यमान प्राप्त हुआ। शिक्षकों के स्वभाव और उनके परिमाणों तथा कार्य–संस्कृति के मध्य सह–संबंध गुणांक .001 स्तर पर सार्थक नहीं पाया गया जो इस बात का द्योतक है कि शिक्षकों के स्वभाव एवं उनके परिमाण चाहे कैसी भी हो उन शिक्षकों की कार्य–संस्कृति बिना प्रभावित हुए सम्पादित होती है।

Reference

* परमेश, सी.आर. एवं नारायण एस. (1977), "इफेक्ट ऑफ क्रियेटिविटी एण्ड इंटेलीजेंस ऑन टेम्पेरामेन्ट" जर्नल ऑफ एजूकेशन एण्ड साइकोलॉजी, वॉल्यूम–34 (III & IV) पृष्ठ 159.
* बेट्स, जॉन.ई. एवं थामस ऐलेक्जेन्डर (1994), टेम्पेरामेन्ट इनडिवीजूअल डिफरेन्सेस एट दी इन्टर फेस ऑफ बायोलॉजी एण्ड बिहेवियर , वाशिंगटन डी.सी. आपा प्रेस
* वैलेंसिक क्रिस्टीन, क्रासकी, जेम्स, सी. एवं रिचमन, वर्जिनिया, पी. (2010), "टेम्प्रामेंट एण्ड सोशियो कम्युनिकेटिव ओरिएंटेशन", कम्युनिकेशन रिसर्च रिपोर्ट 17, पृष्ठ 115–114
* सांगरी, कुमकुम एवं वैद्य, सुदेश. (2006), "लिंग एवं कार्य–संस्कृति पर अध्ययन", www.genwaar.gen.in/pub2.html-21kp://in.search.ahoo.com/search? p=teacher %27s+work+culture&y=all+the+Web&ei=UTF-8&fl=0&meta=0…. 10/28/20.
* शर्मा, डॉ. अंजु (2010), "विभिन्न शालेय संगठनात्मक वातावरण वाले विद्यालयों के शिक्षकों की कार्य–संस्कृति पर एक अध्ययन" पी–एच.डी. शोध प्रबंध पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर, पृष्ठ 84–86.